Established in 2008
"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, भारत

NAAC Accredited | UGC Approved | Recognized by Statutory Councils

पारिस्थितिक नारीवाद के विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोधार्थी

रेखा चौधरी

एनरोलमेन्ट नं.

JVR/II/22/11047

शोध निर्देशिका

डॉ. सपना गेहलोत

मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग

शिक्षा एवं कार्यप्रणाली संकाय

पीएच.डी.

(राजनीतिक विज्ञान)

शोध उपाधि पंजीयन के लिए प्रस्तुत

सार-संक्षेप (SYNOPSIS)

Estd. in 2008

''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ''

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, भारत

NAAC Accredited | UGC Approved | Recognized by Statutory Councils

पारिस्थितिक नारीवाद के विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोधार्थी

रेखा चौधरी

एनरोलमेन्ट नं.

JVR/II/22/11047

शोध निर्देशिका

डॉ. सपना गेहलोत

मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग

शिक्षा एवं कार्यप्रणाली संकाय

पीएच.डी.

(राजनीतिक विज्ञान)

शोध उपाधि पंजीयन के लिए प्रस्तुत

सार-संक्षेप (SYNOPSIS)

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	03
2.	विषय एवं अध्ययन क्षेत्र पारिस्थितिक नारीवाद के विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	03
3.	उद्देश्य	03
4.	अध्ययन की रूपरेखा	
	1. नारीवाद का परिचय व सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य	03
	2. परिस्थितिक नारीवाद का सैद्धांतिक अध्ययन	04–11
	3. भारत में पारिस्थितिकी नारीवाद एक आंदोलन	11–13
	4. भारत में पारिस्थितिकी नारीवाद का प्रभाव और महत्व	13
	5. निष्कर्ष / उपसंहार	13
5.	शोध परिकल्पना	14
6.	शोध प्रश्न	14
7.	शोध पद्धति	15
8.	साहित्य अवलोकन	15
9.	संकलन	17
10.	संदर्भ ग्रंथ सूची एवं वेब लिंक्स	18

1. प्रस्तावना

हम आज एक ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जहां इस तथ्य की तीव्र गति से मान्यता और एक पहचान दी जा रही कि मानव प्रजातियों का अस्तित्व समाज और पर्यावरण के बीच स्थापित संतुलित संबंध पर निर्भर करता है। जीवन का यह संतुलन तभी संभव हो सकता है जब प्रकृति और संस्कृति के बीच अंतःप्रतिच्छेदन के बारे में जागरूकता और चेतना पैदा हो। और हम इस पारस्परिकता का निर्माण करने वाले विभिन्न विचारों और प्रणालियों को समझें। जाहिर है, ऐसी चेतना के उद्भव के विभिन्न आयाम होते हैं जिसमें समाज और प्रकृति एक साथ बंधे हुए होते हैं। पारिस्थितिक जागृति की के साथ–साथ विभिन्न रणनीतियों की आवश्यकता होती है जिनके माध्यम से ''हम और हमारी दुनिया'' के बीच पारिस्थितिक संतुलन प्राप्त किया जा सकता है, जिसका आज के संदर्भ में सर्वोपरि महत्त्व है।

2. विषय एवं अध्ययन क्षेत्र पारिस्थितिक नारीवाद के विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

यह इकाई इस बारे में एक महत्त्वपूर्ण पहलू और उससे जुड़ी रणनीतियों, अर्थात् लैंगिकता, विकास और पर्यावरण के बीच संबंध को संबोधित करेगी।

हम लैंगिकता, पर्यावरण और विकास पर आलोचनात्मक चर्चा निम्नलिखित तरीके से पारिस्थितिक नारीवाद (इकोफेमिनिज्म) को परिभाषित करेंगे। इसके बाद हम वंदना शिव के कार्य की मदद से एक पारिस्थितिक नारीवादी (इकोफेमिनिस्ट) नजरिये से लैंगिकता, पर्यावरण और विकास के बीच संबंधों पर चर्चा करेंगे और अंतिम खंड में हम बीना अग्रवाल के कार्य की मदद से नारीवादी पर्यावरणवाद द्वारा प्रस्तुत पारिस्थितिक नारीवाद (इकोफेमिनिज्म) का समीक्षात्मक अध्ययन करेंगे।

3. उद्देश्य

- इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप सक्षम होंगे –

  जेंडर विकास और ''पर्यावरण'' के बीच घनिष्ठ संबंध पर विचार करने के लिए,

  जेंडर और पर्यावरण पर पर्यावरण समाजशास्त्र के भीतर मुख्य बहस पर चर्चा करने के लिए.
- समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, पारिस्थितिक नारीवाद और नारीवादी पर्यावरणवाद का गठन करने वाले विभिन्न आयामों के बीच जटिल परस्पर क्रिया और संबंधों की व्याख्या करने के लिए

4. अध्ययन की रूपरेखा

1. नारीवाद का परिचय व सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य :–

नारीवाद एक बौद्धिक प्रतिबद्धता और एक राजनीतिक आंदोलन दोनों हैं जो महिलाओं के लिए न्याय और सभी रूपों में लिंगवाद के अंत की मांग करता है। हालाँकि, नारीवाद के कई अलग–अलग प्रकार हैं। नारीवादी इस बात पर असहमत हैं कि लिंगभेद क्या है और इसके बारे में वास्तव में क्या किया जाना चाहिएय वे इस बात पर असहमत हैं कि एक महिला या पुरुष होने का क्या मतलब है और लिंग के क्या सामाजिक और राजनीतिक निहितार्थ हैं या होने चाहिए। बहरहाल, सामाजिक न्याय की

खोज से प्रेरित, नारीवादी जांच सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक घटनाओं पर व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है। नारीवादी सिद्धांत और राजनीति के लिए महत्वपूर्ण विषयों में शामिल हैंरू शरीर, वर्ग और कार्य, विकलांगता, परिवार, वैश्वीकरण, मानवाधिकार, लोकप्रिय संस्कृति, नस्ल और नस्लवाद, प्रजनन, विज्ञान, स्वयं, यौन कार्य और कामुकता । नारीवाद को और भी स्पष्ट करने के लिए कुछ प्रमुख विद्वानों की परिभाषाओं का उल्लेख कर सकते हैं –

''महिलाओं की बनिस्बत नारीवाद का दृष्टिकोण है क्योंकि सर्वहारा वर्ग के अनुभव की तरह, एक दमित समूह होने के नाते महिलाओं के अपने अनुभवों और गतिविधियों में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू होते हैं। नारीवादी दृष्टिकोण इन अनुभवों में निहित मुक्ति की संभावनाओं को चुनकर उनका विस्तार करता है।'' **हार्डस्टॉक**

''नारी पुरुष प्रधान समाज की कृति है। वह नारीवाद और समाज, अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए, जन्म से ही महिला को कई नियमों के ढांचे के भीतर एक अंतर्संबंध में ढालता चला गया है।'' सीमोन द बोउवार

2. परिस्थितिक नारीवाद का सैद्धांतिक अध्ययन

पारिस्थितिक नारीवाद

''इकोफेमिनिज्म एक आंदोलन है जो प्राकृतिक दुनिया के शोषण और गिरावट और महिलाओं की अधीनता और उत्पीड़न के बीच संबंध देखता है। यह 1970 के दशक के मध्य में दूसरी लहर नारीवाद और हरित आंदोलन के साथ उभरा। इकोफेमिनिज्म नारीवादी के तत्वों को एक साथ लाता है और हरित आंदोलन, जबकि एक ही समय में दोनों के लिए एक चुनौती पेश करते हैं।''

यह हरित आंदोलन से गैर–मानव दुनिया पर मानवीय गतिविधियों के प्रभाव के बारे में चिंता लेता है और नारीवाद से मानवता के दृष्टिकोण को उन तरीकों से लैंगिक रूप से देखता है जो अधीनस्थ, शोषण करते हैं और महिलाओं पर अत्याचार करते हैं।

इकोफेमिनिज्म और महिलाओं की स्थिति इकोफेमिनिज्म समाज में महिलाओं की स्थिति को कम करने में मदद कर सकता है। ऐसे कई तरीके और अंतर्संबंध हैं जिनका उपयोग किया जा सकता है। उनमें से कुछ नीचे सूचीबद्ध हैं:

इकोफेमिनिज्म द्वैतवाद को उजागर करने में मदद करता है: इकोफेमिनिस्टों ने महिलाओं और प्रकृति के उत्पीड़न के बीच कई संबंधों का वर्णन किया है जो यह समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं कि पर्यावरण एक नारीवादी मुद्दा क्यों है, और, इसके विपरीत, नारीवादी मुद्दों को पर्यावरणीय चिंताओं के संदर्भ में क्यों संबोधित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जानवरों और प्रकृति के साथ अंतर्संबंधों का जीवन जिस तरह से पश्चिमी बौद्धिक परंपरा में ऐतिहासिक रूप से महिलाओं और प्रकृति की संकल्पना की गई है, उसके परिणामस्वरूप महिलाओं, भावनाओं, जानवरों, प्रकृति और शरीर से जुड़ी हर चीज का

अवमूल्यन हुआ है, साथ ही मूल्य में वृद्धि हुई। है। वे चीजें जो पुरुषों, तर्क, मनुष्य, संस्कृति और दिमाग से जुड़ी हैं।

महिलाओं की जीवन स्थितियों को बेहतर बनाने में मदद करता है: महिलाओं और जानवरों के जीवन पर पर्यावरण प्रदूषण और गिरावट के प्रभावों का दस्तावेजीकरण करके नारीवाद, पशु मुक्ति और पर्यावरणवाद के बीच एक और संबंध बनाया गया है। जहरीले कीटनाशक, रासायनिक अपशिष्ट, अम्लीय वर्षा, विकिरण और अन्य प्रदूषक महिलाओं, महिलाओं की प्रजनन प्रणाली और बच्चों पर अपना प्रभाव डालते हैं। महिलाओं, बच्चों, तीसरी दुनिया के लोगों, जानवरों और पर्यावरण के लिए जीवन की खराब गुणवत्ता का दस्तावेजीकरण करके, पारिस्थितिक नारीवादी यह प्रदर्शित करने में सक्षम हैं कि लिंगवाद, नस्लवाद, वर्गवाद, प्रजातिवाद और प्रकृतिवाद (प्रकृति का उत्पीड़न) परस्पर मजबूत करने वाली प्रणालियाँ हैं। जुल्म का एक ''एकल मुद्दा'' आंदोलन होने के बजाय, पारिस्थितिक नारीवाद इस धारणा पर आधारित है कि सभी उत्पीड़ित समूहों की मुक्ति को एक साथ संबोधित किया जाना चाहिए।

इकोफेमिनिस्टों का मानना है कि हम मानवीय उत्पीड़न को समाप्त किए बिना प्रकृति के शोषण को समाप्त नहीं कर सकते हैं, और इसके विपरीत भी। उनका तर्क है कि दोनों करने के लिए, हमें उन धारणाओं को उजागर करना होगा जो पितृसत्ता का समर्थन करती हैं और पुरुषत्व की हमारी अवधारणा को दूसरों पर ''शक्ति'' और ''स्त्रीत्व'' की अस्वीकृति और अपमान से अलग करती हैं।

इकोफेमिनिस्ट का सुझाव है कि पितृसत्ता के विकल्प संभव हैं, जैसा कि महिलाओं और आदिवासी संस्कृतियों में प्रमाणित है।

इकोफेमिनिज्म का दावा है कि महिलाओं और प्रकृति दोनों पर प्रभुत्व है और इस प्रकार अधिक अन्योन्याश्रित विश्वदृष्टि की आवश्यकता पर बल दिया गया है। इकोफेमिनिस्टों का मानना है कि सभी जीवित चीजें ग्रह की भलाई के लिए आवश्यक हैं और मनुष्य अलग या श्रेष्ठ नहीं हैं।

एक पारिस्थितिक नारीवादी ढांचे के साथ, पर्यावरण संबंधी उपभोग अनुसंधान अधिक मुक्तिदायक दृष्टिकोण अपनाएगा। अनुसंधान एजेंडा कॉर्पोरेट और सार्वजनिक नीति को बदलने पर केंद्रित होगा ताकि पारिस्थितिक संकट का बोझ अकेले महिलाओं पर न डाला जाए। पर्यावरण–नारीवाद का परिचय खरीदारों की विशेषताओं से ध्यान हटाकर पर्यावरण–संबंधित उपभोग में अनुसंधान के लिए स्प्रिंगबोर्ड प्रदान करता है और उन्हें पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों को खरीदने के लिए एक अधिक सामाजिक–राजनीतिक विश्लेषण के लिए कैसे प्रेरित किया जा सकता है जो महिलाओं को प्रकृति से जोड़ता है और उजागर करता है कि उन्हें कैसे मजबूर किया गया है ष्पर्यावरणीय घरेलू नौकरानियोंष की प्राथमिक भूमिका में इस संबंध को उजागर करके, उपभोक्ता शोधकर्ता अनुसंधान कर सकते हैं जिससे महिला उपभोक्ता को पर्यावरण– जिम्मेदार दुकानदार बनने की उसकी खोज में लाभ होगा।

शब्द ''इकोफेमिनिज्म'' एक पारिस्थितिक नैतिकता को विकसित करने की चिंता का अधिक

वर्णनात्मक है जो केवल सामाजिक न्याय की अवधारणाओं से परे है। यह भी सुझाव दिया गया है कि उपसर्ग ''इको'' उन मर्दाना–पहचान वाले हरे लोगों के लिए एक रियायत है जो नारीवाद को संभाल नहीं सकते हैं। यह पितृसत्तात्मक तर्क के मूल में गहराई से प्रहार करता है।

लैंगिकता, पर्यावरण और पितृसत्ता

जैसा कि कहा गया है, इकोफेमिनिज्म का उद्देश्य यह देखना है कि महिलाएं और पर्यावरण किस प्रकार कई तरीकों से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यह कोई नया रिश्ता नहीं है क्योंकि लगभग सभी संस्कृतियों में महिलाओं और प्रकृति को एक आंतरिक बंधन में मान्यता दी गयी है। यह बंधन ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पौराणिक रूप से पाया जाता है और वहाँ इस बंधन को दर्शाया भी जाता है। उदाहरण के लिए भारत में महिलाओं को अक्सर कल्पना और परंपरा दोनों में ही ''सृष्टि'' या ''प्रकृति'' के रूप में दर्शाया जाता है।

पारिस्थितिक नारीवाद (इकोफेमिनिज्म) महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि यह महिलाओं और प्रकृति के बीच इस संबंध में एक और आयाम जोड़ देता है, अर्थात् पदानुक्रम और वर्चस्व का। इकोफेमिनिज्म ने इसे अंतसंबंध बनाकर विकास द्वारा पर्यावरण के शोषण और पितृसत्ता द्वारा महिलाओं के वर्चस्व के बीच घनिष्ठ संबंध को उजागर किया है।

इस प्रकार, इकोफेमिनिज्म एक नारीवादी लेंस का उपयोग करते हुए प्रकाश डालता हैः–

कई तरीकों पर जिनमें एक पितृसत्तात्मक समाज द्वारा प्रकृति और महिलाओं दोनों के साथ व्यवहार किया जाता है, सामाजिक मानदंडों पर कि कैसे वे महिलाओं और प्रकृति पर अन्यायपूर्ण प्रभुत्व डालते हैं, 'समानांतर प्रक्रियाओं के रूप में प्रकृति के विकास एवं विनाश की भूमिका और महिलाओं का पितृसत्तात्मक शोषण पर।

पारिस्थितिक नारीवाद (इकोफेमिनिज्म) की उत्पत्ति

पारिस्थितिक नारीवाद पर प्रारंभिक कार्य महिलाओं और पर्यावरण के बीच संबंधों का दस्तावेजीकरण करने के लिए समर्पित था। एक खास पारिस्थितिक नारीवादी रोजमेरी रूथर ने जोर देकर कहा कि यदि महिलाएं मुक्त, आजाद और स्वतंत्र होना चाहती हैं तो उन्हें प्रकृति के वर्चस्व को समाप्त करने के बारे में सोचना होगा। यह तभी संभव होगा जब महिलाएं और पर्यावरणविद एक साथ मिलकर काम करें और उन्होंने पितृसत्तात्मक संरचनाओं और विचारों पर भी सवाल उठाए।

1980 के दशक के उत्तरार्ध तक, इकोफेमिनिज्म एक लोकप्रिय आंदोलन बन गया था, जिसका मुख्य कारण नारीवादी सिद्धांतकार येनेस्ट्रा किंग के कार्यों का परिणाम था, उन्होंने एक लेख लिखा था जिसका शीर्षक ''व्हाट इज इकोफेमिनिज्म ?'' था। इस बारे में किंग ने सवाल उठाये कि विश्वास प्रणाली कैसे पृथ्वी के शोषण की अनुमति देती है और किस प्रकार इसे महिलाओं के उत्पीडन से जोड़ देती है। किंग्स के लिखे आर्टिकल जैसे काम के माध्यम से इकोफेमिनिज्म ने एक वैकल्पिक विश्व

दृष्टिकोण जैसे विचार को जन्म दिया जहां पृथ्वी को पवित्र माना जाता है. पारिस्थितिक चेतना का आह्वान किया जाता है और महिलाओं एवं प्रकृति को परस्पर अंतर्निर्मित और असंख्य तरीकों से जुड़ा हुआ समझा जाता है।

परिवर्तनवादी पारिस्थितिक नारीवाद और सांस्कृतिक पारिस्थितिक नारीवाद

चूँकि पारिस्थितिक नारीवाद का विकास निरन्तर हो रहा था, यह कई शाखाओं में भी फैला और 1980 के दशक के अंत तक इस विचारधार की दो अलग–अलग शाखाएँ उभर का सामने आयी रेडिकल इकोफेमिनिज्म और कल्चरलकोफेमिनिज्म सीधे शब्दों में कहें:

परिवर्तनवादी और उग्र सुधारवादी पारिस्थितिक नारीवादियों का तर्क है कि पितृसत्तात्मक समाज और वर्चस्व की विचारधाराएं प्रकृति और महिलाओं को समानता से देखती हैं ताकि दोनों का दमन, अत्याचार और शोषण किया जा सके। यह महिलाओं और प्रकृति दोनों को वस्तुओं के रूप में वर्णित करके किया गया था, इस प्रकार उन्हें शोषण, क्षरण और गिरावट के योग्य माना गया।

दूसरी ओर, सांस्कृतिक पारिस्थितिक नारीवादियों ने महिलाओं और पर्यावरण के बीच स्थापित संबंध पर जोर दिया, जो महिलाओं और प्रकृति के पोषण के एक अंतर्निहित बंधन पर आधारित है। यह साझा अनुभव महिलाओं को पर्यावरण के विनाश, अत्याचार, क्षरण और गिरावट के प्रति अधिक जागरूक और सतर्क बनाता है।

बंधन पर आधारित है। यह साझा अनुभव महिलाओं को पर्यावरण के विनाश, अत्याचार, क्षरण और गिरावट के प्रति अधिक जागरूक और सतर्क बनाता है।

स्त्रीलिंग और पुर्लिंग सिद्धांत

ऐतिहासिक रूप से अधिकांश संस्कृतियों में महिलाओं को स्त्री सिद्धांत और जीवन के पोषणकर्ता और अवतार के रूप में देखा गया है और आज भी पितृसत्तात्मक विचारधारा ने लगभग उन्हें अदृश्य, अस्पष्ट और हमेशा ही हाशिए पर डाल हुआ है।

भारतीय संदर्भ में, महिलाओं की अवस्थिति, एवं संस्कृति और प्रकृति के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को समझने के लिए, वंदना शिव ने महिलाओं की दुनिया, पर्यावरण और ब्रह्मांडीय दुनिया के बीच संबंधों की जांच–पड़ताल की है। उनका तर्क है कि महिलाओं और प्रकृति के बीच एक वैचारिक संबंध हैं जो विश्वास प्रणालियों, विचारों, मूल्यों और उनके सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व में घनिष्ठता से निहित है।

धर्मग्रंथों, शास्त्रों, पाण्डुलिपियों और अन्य सांस्कृतिक कार्यों ने सृजन एवं विनाश और गतिशील ऊर्जा या शक्ति के विचारों के बीच परस्पर क्रिया को मान्यता और एक पहचान दी है। ऊर्जा की इस अभिव्यक्ति को प्रकृति कहा जाता है, स्त्री और रचनात्मक सिद्धांत जो चेतन और निर्जीव दोनों है। यह

पुल्लिंग के सिद्धांतों या पुरुष के संयोजन के साथ मौजूद रहते है। वे सब मिलकर संसार का निर्माण करते हैं (देखें: शिव, 2007:37)।

भारत में, पुल्लिंग और स्त्रीलिंग सिद्धांतों के बीच यह द्वंद्वात्मक एकता, सद्भाव और सामंजस्य पारिस्थितिक विचार और क्रिया का आधार होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय संस्कृति में स्त्री सिद्धांत की पूजा कई तरीकों और रूपों में की जाती है, जो सभी महिलाओं और प्रकृति के बीच घनिष्ठ और गतिशील संबंध को उजागर करते हैं। उन्होंने पितृसत्तात्मक संरचनाओं और विचारों पर भी सवाल उठाये।

लैंगिकता और पर्यावरण

पारिस्थितिकी नारीवादी (इकोफेमिनिज्म) दृष्टिकोण इस तथ्य को स्थापित करता है कि –

- महिलाओं को प्रकृति में अंतर्निहित कर रहे हैं, प्रकृति के शोषण को महिलाओं के शोषण की तरह देखा जा सकता है, विकास और अन्य पितृसत्तात्मक ताकतें महिलाओं और प्रकृति पर हावी रहती हैं और उनका शोषण करती रहती हैं।
- नंदना शिव कहती हैं कि ज्यादातर समाजों और संस्कृतियों की यह मान्यता हैं कि महिलाएं और प्रकृति शक्तिशाली होती हैं, इसलिए उन्हें नियंत्रित करने, सताने और उत्पीड़ित करने की आवश्यकता रहती है। ऐसा करने में पितृसत्तात्मक दुनिया इस बात को कम आंकती है कि भले ही वे पितृसत्ता और शोषण की शिकार रही हों, लेकिन महिलाएं बदलाव की एजेंट भी हो सकती हैं। प्रकृति के साथ अपने घनिष्ठ संबंधों के कारण महिलाएं पुरुषों की तुलना में पारिस्थितिक आपदाओं से अधिक प्रभावित होती है, और यही कारण है कि हम पाते हैं कि वे प्रकृति के विनाश के खिलाफ होने वाले विरोध प्रदर्शनों में हर जगह सबसे आगे रहती हैं।

वंदना शिव ऊपर व्यक्त की गयी भारतीय और पश्चिमी समझ के बीच अंतर भी करती हैं। भेद करते हुए सरल शब्दों में वे कहती हैं, पश्चिमी समझ में, महिलाओं और पर्यावरण के बीच के संबंध को मुख्य रूप से भौतिक के रूप में देखा जाता हैय गैर–पश्चिमी देशों में, इस संबंध को वैचारिक और वास्तविक माना जाता है और महिलाओं और प्रकृति को स्त्री सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करने के लिए देखा जाता है।

महिलाएं और प्रकृति

प्रकृति जीवन के कई रूपों के साथ विविधता पैदा करती है और हर पत्थर था पेड़, पूल, फल या जानवर में रहती है, विचरण करती है और उनके साथ और अदिति और आदि शक्ति जैसे नामों से पहचानी जाती है। अपने दैनिक आबपाशी, पानी और पूजा में महिलाएं घर के संबंध को ब्रह्मांड और विश्व प्रक्रिया के साथ नवीनीकृत करती रहती हैं। जब हिंदू महिलाएं तुलसी या पवित्र तुलसी के पौधे को लाल कपड़े से ढकती हैं, तो वे नाजुक पौधे के नारीकरण और महिलाओं और प्रकृति की निकटता

को व्यक्त करती हैं। यह भी देखा जाता है कि भारत भर में महिलाओं द्वारा गूलर और बढ़ (फिक्स) के पेड़ या पीपल के पेड़ की पूजा कैसे की जाती है। हर संस्कृति में महिलाओं द्वारा प्रकृति की पूजा–अर्चना करने के ऐसे कई उदाहरण मिल जाते हैं।

दोषपूर्ण या अपूर्ण विकास (कुरूपता)

एक पारिस्थितिक विज्ञानी और नारीवादी के रूप में वंदना शिव के लिए यह समस्या आधुनिक उपभोक्तावादी विश्वदृष्टि से उत्पन्न होती है जिसे पितृसत्तात्मक–पूंजीवादी सत्ता संरचना द्वारा सर्वोत्तम रूप से चित्रित किया गया है जो विकास के लिए महत्त्वपूर्ण और केंद्रीय है। वह इसे अपूर्ण विकास का पश्चिमी मॉडल कहती हैं।

इस मॉडल में पितृसत्तात्मक विचारधारा और समझ संस्कृतियों और समाजों में एक पदानुक्रमित सामाजिक व्यवस्था बनायी जाती है। यह असमानता पूंजीवाद, उपभोक्तावाद और तकनीकी विकास की भूमिका से मजबूत होती रहती है जिसका उद्देश्य पूरी तरह से न्यूनतम संभव लागत परश्चन का निर्माण और संचय करना होता है और पूंजीवादी उद्यमों के मालिक के उद्देश्यों को पूरा करता है।

पितृसत्ता और पूंजीवाद के बीच यह संबंध भी पदानुक्रमित संरचना पर बनाया गया है जो पुरुषसत्ता की श्रेष्ठता और स्त्री के उत्पीड़न और इस प्रकार प्रकृति को भी बढ़ावा देता है और उचित ठहराता है। यह एक संसाधन के रूप में प्रकृति की ऐसी समझ है जो कुविकास एवं अपूर्ण विकास के प्रतिमान की नींव पर भी निहित रहता है जिसमें प्रभुत्वशाली पुरुषों की बसायी हुई। दुनिया द्वारा महिलाओं की दुनिया, प्रकृति और तीसरी दुनिया का शोषण किया जा रहा है। वंदना शिव का तर्क है कि अविकसितता और अपूर्ण विकास यह दर्शाता है कि पूंजीवाद, पितृसत्ता और शोषण न केवल परस्पर जुड़े हुए हैं और किस प्रकार ये आपस में संबंधित है, बल्कि दुनिया के कई स्थानों पर समकालीन परिवेश, वातावरण और पड़ोस को समस्याग्रस्त और विनाशकारी तरीकों से भी आकार देते रहते हैं।

महिलाओं के काम अवमूल्यन और एक संसाधन के रूप में प्रकृति

जैसा कि हमने देखा है, मनुष्य और प्रकृति के बीच संबंधों की पश्चिमी समझ एक द्वैतवाद पर बनायी गयी है जिसने पितृसत्ता और विकास द्वारा प्रकृति और पर्यावरण को आसानी से अपने अधीन करने की अनुमति दे दी है। इसने एक नये वैविक नजरिये और विश्वदृष्टि को जन्म दिया है जिसमें प्रकृति (ए) निष्क्रिय, गतिहीन और धैर्यवान (बी) एकरूपता और यंत्रवत (सी) अपने भीतर खंडित और पृथक करने योग्य (डी) मनुष्य से अलग, निम्न और अधीन (ई) जिनका मनुष्य द्वारा प्रभुत्व और शोषण किया जाना है। आप देख सकते हैं कि वंदना शिव द्वारा खंड 8. 3.1 में परिभाषित प्रकृति से यह किस प्रकार भिन्न है।

विकास का यह प्रमुख पितृसत्तात्मक परिप्रेक्ष्य और दृष्टिकोण पूंजी संचय के विचार में निहित होता है और यह प्रकृति के कार्य और महिलाओं के कार्य दोनों को अदृश्य, तुक्ष्य और महत्वहीन बना देता

है। इससे प्रकृति के साथ–साथ महिलाओं का अवमूल्यन और मान्यता समाप्त हो जाती है जिसके कारण दोनों का समानांतर शोषण होता रहता है।

प्रकृति और महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों और अदृश्य धन के प्रति अंधापन का यह रवैया, कि जिनके पास शक्ति और प्रभुत्व होता है, प्रजातियों के अस्तित्व और एक स्थायी जीवन के लिए आवश्यक पारिस्थितिक संतुलन को खतरा बन जाता है। वंदना शिव का तर्क है कि स्त्रीवादी सिद्धांत के अनुसार यह काम और धन में महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे स्थिरता और स्थिरता में निहित रहते हैं। बड़े अफसोस की बात है कि दुर्भाग्य से, यह अमान्य हो जाता है और एकरूपता और निजीकरण के माध्यम से नष्ट तिरस्कृत और दूर किया जाता है जो प्रकृति को कच्चे माल और वस्तुओं और महिलाओं को केवल प्रजनन तक सीमित कर देता है।

हमारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि जब हम प्रकृति को एक 'संसाधन' के रूप में देखते हैं, जिसका शोषण किया जाना है तो हम विकास और पर्यावरण के बीच एक संबंध बना लेते हैं जो पितृसत्तात्मक / पुरुषसत्ता द्वारा ''प्रकृति की महारत के विचार से बनाया गया है। वंदना शिव का कहना है कि यह न केवल प्रकृति के शोषण को सक्षम बनाता है और प्रकृति का दोहन होता है, बल्कि ''प्रकृति की मृत्य'' और महिलाओं के अवमूल्यन, विस्थापन, वितरण और उनके हाशिए पर रहने की अनुमति देता है (देखेंः शिव, 2007, पृष्ठ 41) ।

पारिस्थितिक नारीवाद जो अनिवार्य रूप से तर्क दे रहा है कि जब हम प्रकृति को नष्ट करते हैं तो हम महिलाओं को भी नष्ट कर देते हैं, जब हम प्रकृति का बहिष्कार करते हैं, तो हम महिलाओं का भी बहिष्कार कर देते हैं। जीवन के निर्माण और संरक्षण में महिलाओं की भूमिका एक पारिस्थितिक रूप से अलग दुनिया में खो जाती है जो महिलाओं की भूमिका और पारिस्थितिक तंत्र के साथ उनके सामंजस्य के प्रति अंधी होती है। हमें यह जानने और समझने की जरूरत है कि महिलाओं और प्रकृति के बीच की यह साझेदारी एक स्थिरता को सुनिश्चित करती हैं और यह महत्वपूर्ण और आवश्यक साझेदारी है जो तब नष्ट हो जाती है जब विकास की परियोजना पितृसत्तात्मक की परियोजना बन जाती है।

हमें यह याद रखना चाहिए, अपूर्ण विकास इस प्रकार एक प्रतिमान है जो प्रकृति को केवल एक संसाधन के रूप में और महिलाओं को केवल एक प्रजननी के रूप में देखता है और विनाश की संस्कृति को बढ़ावा देता है। जैसा कि वंदना शिव कहती हैं, अपूर्ण विकास न केवल शोषण करता है बल्कि महिलाओं और प्रकृति दोनों के लिए अशक्त कर देने वाला भी है और अंततः नयी बस्तियों को बनाने वाले पुरुष को विकास का एजेंट और मॉडल बनाता है।

महिलाएं, तीसरी दुनिया और प्रकृति अविकसित हो जाती हैं और परिवर्तन तभी आएगा जब इससे जानकारी प्राप्त की जाएगी और प्रकृति को समझने का एक पारिस्थितिक तरीका सामने आएगा ।

पारिस्थितिक नारीवाद का महत्व

पारिस्थितिक नारीवादियों का तर्क है कि हाशिए पर रहने वाले समुदायः महिलाएं, तीसरी दुनिया, किसान, आदिवासी आदि सभी अपूर्ण विकास के शिकार होते हैं। लेकिन साथ ही, हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि वे पारंपरिक ज्ञान के भंडार एजेंट भी होते हैं। उन्हें केवल पुरुष जगत द्वारा विकास के शिकार के रूप में कम नहीं आंका जा सकता है। हाशिए पर मौजूद समुदाय कार्रवाई करने और शोषण पर सवाल उठाने में सक्षम होते हैं और कुप्रथा द्वारा पैदा की गई असमानताओं को चुनौती भी दे सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि हम अपने सोचने के तरीके को बदलें ताकि एक नया बौद्धिक पारिस्थितिक प्रतिमान पैदा हो सके। पारिस्थितिक नारीवाद के महत्व को इस तरह से समझा जा सकता हैरू महिलाओं को इस बात का प्रत्यक्ष और पूरा–पूरा ज्ञान होता है कि हिंसा और शोषण का शिकार होने का क्या मतलब होता है और जो उन्हें प्रेरित करता है, उन्हें प्रेरणा देता है, प्रोत्साहिन होने की वजह बताता है वह है पर्यावरण के साथ उनका सीधा जुड़ाव उन्हें प्रकृति, जंगलों और पारिस्थितिक तंत्र के बारे में पारंपरिक ज्ञान और जानकारी होती है और वे पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण में घनिष्ठता से जुड़ी रहती हैं। प्रकृति से जुड़े होने के कारण ये प्रकृति से संबंधित समस्याओं के समाधान में अग्रदूत बन जाती हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पारिस्थितिक नारीवाद और महिलाओं के पारिस्थितिक आंदोलनों की तरह एक परिप्रेक्ष्य पितृसत्ता और अपूर्ण विकास के प्रतिमानों के लिए एक चुनौती होता है।

3. भारत में पारिस्थितिकी नारीवाद एक आंदोलन

इकोफेमिनिज्म के विचार का महत्व भारत में सबसे प्रमुख पर्यावरण आंदोलनों, अर्थात् चिपको आंदोलन और नर्मदा बचाओ आंदोलन में दिखाई देता है, इन आंदोलनों में महिलाओं द्वारा किया गया योगदान अपरिहार्य है और इन्हें प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण के कारण इकोफेमिनिस्ट माना जाता है। और महिलाओं के लिए आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना प्रतिभागियों की दो प्रमुख चिंताएँ थीं। वंदना शिवा को भारत में इकोफेमिनिस्ट विमर्श का अग्रणी माना जाता है, जिनका मानना है कि महिलाओं के योगदान को दरकिनार कर दिया गया, लेकिन अधिकांश सामाजिक समस्याओं को सुलझाने और पर्यावरण संरक्षण में महिलाएं हमेशा केंद्र में रही हैं। विशेष रूप से, वंदना शिवा की दृष्टि भारतीय दर्शन से काफी प्रेरित है और इसके आध्यात्मिक पहलुओं ने उनके तर्कों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

वह कहती हैं, भारत में महिलाएं कल्पना और व्यवहार दोनों में प्रकृति का एक अंतरंग हिस्सा हैं। एक स्तर पर, प्रकृति को स्त्री सिद्धांत के अवतार के रूप में दर्शाया गया है, और दूसरे स्तर पर, उसे जीवन उत्पन्न करने और जीविका प्रदान करने के लिए स्त्री द्वारा पोषित किया जाता है। उनकी सबसे उल्लेखनीय पुस्तक ''स्टेइंग अलाइवः वीमेन, इकोलॉजी एंड सर्वाइवल इन इंडिया'' में, वह अपने

समझौते के दो पहलुओं को उजागर करती है, पहला ''द फेमिनिन प्रिंसिपल'' की उनकी व्याख्या है जो आध्यात्मिक पारिस्थितिक नारीवाद, हिंदू पौराणिक कथाओं और भारतीय दर्शन से दृढ़ता से संबंधित है। इस सिद्धांत को ''प्रकृति'' से मान्यता प्राप्त है जो प्रकृति के सामंजस्य और विविधता का पोषण और सुरक्षा करना चाहती हैं, क्योंकि यह पृथ्वी पर सभी जीवन का स्रोत है। दूसरा पहलू सामाजिक और राजनीतिक पर्यावरण– नारीवाद से संबंधित है जो पितृसत्तात्मक आधिपत्य और पुरुषवादी विश्वदृष्टि की आलोचना करता है। वह पूंजीवाद और उपनिवेशवाद की पश्चिमी विचारधारा के कारण होने वाले कुविकास और न्यूनीकरणवाद की भी आलोचना करती हैं। (8) शिवा पश्चिमी प्रौद्योगिकी, पितृसत्तात्मक और औपनिवेशिक परियोजनाओं द्वारा सामने रखे गए विकास मॉडल के खिलाफ हैं क्योंकि ये तरीके स्वाभाविक रूप से हिंसक हैं और महिलाओं और प्रकृति को होने वाले नुकसान के प्रति उदासीन हैं। उनके अनुसार, इन मॉडलों को स्वीकार करने और उनका अभ्यास करने से हम उस अवधारणा से दूर हो गए हैं जो प्रकृति या 'स्त्री सिद्धांत' को एक जीवित और रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में देखती है, और केवल पूर्ति और आनंद के लिए एक निष्क्रिय संसाधन के रूप में मानी जाती है। यह परोक्ष रूप से महिलाओं के हाशिए पर जाने और यहां तक कि उनकी वितरणहीनता के लिए जिम्मेदार है। आधुनिक विकास के तरीके महिलाओं के प्रकृति के ज्ञान और ''जीवित रहने'' के लिए उस पर उनकी निर्भरता पर हमला करते हैं। (9) पारिस्थितिक नारीवाद का सार इस अहसास में निहित है कि महिलाएं न केवल अंधी विकास प्रक्रियाओं की वाहक हैं, बल्कि उनमें क्रांति और परिवर्तन की क्षमता और शक्ति भी निहित है। दुनिया भर में पर्यावरण आंदोलनों और हिमालय के गढ़वाल जिले में 1970 के दशक के चिपको आंदोलन जैसे प्रमुख भारतीय आंदोलनों में महिलाओं द्वारा शुरू किए गए संघर्ष और कार्य– जहां महिलाओं ने जंगल के पुनर्जनन के लिए सुरक्षा और योगदान दिया, यह दर्शाता है कि दोनों के बीच एक अंतर्संबंध है। महिलाएँ, प्रकृति और विकास।

चिपको आंदोलन :

चिपको आंदोलन सबसे प्रसिद्ध और सफल पारिस्थितिक आंदोलन में से एक है, यह अहिंसक संरक्षण का एक रूप था जो भारत के हिमालयी क्षेत्रों में हुआ था। जैसा कि नाम से पता चलता है, मुख्य विचार व्यावसायिक लकड़ी काटने वालों से पेड़ों की रक्षा के लिए पेड़ों को गले लगाना या गले लगाना था। व्यवसाय के लिए पेड़ों को काटने की अनुमति देने के कारण ग्रामीणों और सरकार के बीच संघर्ष हुआ, जो गाँव के निवासियों के लिए अस्वीकार्य और असुविधाजनक था, यह आंदोलन अन्य क्षेत्रों में भी फैल गया। विरोध प्रदर्शन में महिलाओं की भागीदारी साफ दिखीय उन्होंने पेड़ों की रक्षा के लिए पुरुषों के साथ मिलकर और कभी–कभी पुरुषों के विरुद्ध भी काम किया। उनका झुकाव अल्पकालिक व्यावसायिक लाभों के बजाय पेड़ों और प्राकृतिक पर्यावरण को बचाने के दीर्घकालिक लाभों की ओर अधिक था। वे समझते थे कि पेड़ इतने उत्पादक हैं कि वे जरूरतें पूरी कर सकते हैं, लेकिन इंसानों का लालच नहीं। महिलाओं की भागीदारी ने आंदोलन के दायरे को व्यापक बना दिया और घरेलू हिंसा,

ग्राम परिषदों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व, पुरुष शराबबंदी जैसे सामाजिक मुद्दे भी संघर्ष का हिस्सा बन गए। यह महिलाओं, प्रकृति और मानव अस्तित्व और निर्वाह के बीच अंतसंबंध को दर्शाता है। चिपको आंदोलन की बंद्योपाध्याय (1987), शिवा (1987 और 1988) जैसे विचारकों द्वारा महिलाओं और प्रकृति के बीच विशेष संबंध के सबसे बड़े प्रतिनिधित्व में से एक के रूप में बहुत चर्चा की गई है। यह महिलाओं, प्रकृति और मानव अस्तित्व और निर्वाह के बीच अंतर्संबंध को दर्शाता है। चिपको आंदोलन की बंद्योपाध्याय (1987), शिवा (1987 और 1988) जैसे विचारकों द्वारा महिलाओं और प्रकृति के बीच विशेष संबंध के सबसे बड़े प्रतिनिधित्व में से एक के रूप में बहुत चर्चा की गई है। यह महिलाओं, प्रकृति और मानव अस्तित्व और निर्वाह के बीच अंतर्संबंध को दर्शाता है। चिपको आंदोलन की बंद्योपाध्याय (1987), शिवा (1987 और 1988) जैसे विचारकों द्वारा महिलाओं और प्रकृति के बीच विशेष संबंध के सबसे बड़े प्रतिनिधित्व में से एक के रूप में बहुत चर्चा की गई है।

इन आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी ने महिलाओं की स्थिति के लिए एक क्रांति लाने में मदद की, उनकी भागीदारी जंगलों को बचाने में भी प्रभावी साबित हुई। उनकी सक्रिय भागीदारी ने महिलाओं की एक अभिनव शक्ति को प्रदर्शित किया और सफलता ने उन्हें आत्मविश्वास हासिल करने में मदद की और शक्ति और अधिकार के सूक्ष्म अंतरसंबंध का पता लगाया क्योंकि दिन–प्रतिदिन महिलाओं को कृषि गतिविधियों, पशुधन की देखभाल आदि को संभालना पड़ता है। ''असहमति के स्रोत, वैकल्पिक विचारधारा और परिवर्तन के एजेंट'' रहे हैं। और प्रकृति के प्रति उनकी जिम्मेदारी प्रकृति प्रबंधन में उनकी भागीदारी को प्रभावित करनी चाहिए क्योंकि महिलाएँ ही हैं जिन्होंने अधिक काम का बोझ उठाया है और यदि वनों को खत्म कर दिया गया तो परिवार की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के प्रयास किए गए हैं।

4. भारत में पारिस्थितिकी नारीवाद का प्रभाव और महत्व

पश्चिम में पारिस्थितिक नारीवाद पर साहित्य का एक बड़ा और बढ़ता हुआ समूह मुख्य रूप से वैचारिक दृष्टि से लिंग और पर्यावरण से संबंधित है। हालाँकि, भारत में, पर्यावरण विनाश के खिलाफ बढ़ते विरोध और अस्तित्व और निर्वाह के लिए संघर्ष इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि जाति, वर्ग और लैंगिक मुद्दे आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं। पारिस्थितिक नारीवाद के मुख्य सिद्धांतों और उनके खिलाफ की गई आलोचनाओं पर नजर डालूंगी। फिर मैं इस बहस को भारतीय पर्यावरण आंदोलन के भीतर प्रासंगिक बनाने का प्रयास इसमें जाति, वर्ग और लैंगिक मुद्दों के अंतर्संबंधों पर प्रकाश डालूंगा। इसके अलावा मैं यह देखने का प्रयास करूंगी कि क्या पर्यावरण के मुद्दे को भारतीय महिला आंदोलन ने उठाया है।

5. निष्कर्ष / उपसंहार :–

हाल ही में, अधिक से अधिक लोगों का मानना है कि नारीवादी वह व्यक्ति है जो पुरुषों से नफरत करता है। यह एक व्यापक गलतफहमी बन गई है। नारीवादी इसके पक्ष में नहीं हैं. वे पुरुषों और

महिलाओं के लिए एक समान समाज चाहते हैं, न कि ऐसा जहां एक दूसरे पर हावी हो। पुरुषों से नफरत करने वाले व्यक्ति के लिए वास्तविक शब्द मिथ्यावादी है। यह खुद को कई तरीकों से प्रस्तुत करता है, जिनमें यौन भेदभाव, पुरुषों के खिलाफ हिंसा, पुरुषों का अपमान और पुरुषों का यौन वस्तुकरण शामिल है, लेकिन यह इन्हीं तक सीमित नहीं है। जैसा कि हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं, नारीवाद लिंगों की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और व्यक्तिगत समानता के लिए खड़ा है। इसका उद्देश्य समान शैक्षिक और व्यावसायिक अवसर प्राप्त करना है। यह बिजली संरचना को बदलने का प्रयास नहीं करता हैय बल्कि वह पितृसत्तात्मक ढांचे को ध्वस्त करना चाहती है। यह संरचना पुरुषों को कुछ लाभ प्रदान करती है। हालाँकि, अंततः यह पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए हानिकारक है। उदाहरण के लिए, यह दर्शाता है कि महिलाओं को उनकी देखभाल के लिए पुरुषों की आवश्यकता होती है, या वे बहुत भावुक होती हैं, या वे परिवार की प्राथमिक देखभाल करने वाली होती हैं, लेकिन साथ ही, यह उन चीजों को भी बढ़ावा देती है जैसे पुरुषों को कोई भावना नहीं दिखानी चाहिए या पुरुष यौन संबंध नहीं बना सकते हैं हमला किया गया या दुर्व्यवहार किया गया या पुरुष बच्चों की उतनी अच्छी तरह देखभाल नहीं कर सकते जितनी महिलाएँ कर सकती हैं। यह विचार कि पितृसत्ता को मातृसत्ता से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए, कुप्रथा का विचार है, नारीवाद का नहीं। यह विचार कि पितृसत्ता को उलट दिया जाना चाहिए, नारीवादियों द्वारा प्रचारित किया गया है। सिर्फ इसलिए कि कुछ व्यक्ति पुरुषों (दुष्प्रचारकों) से नफरत करते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि नारीवाद को कुप्रथा के साथ जोड़ा जाना चाहिए। हम सभी पुरुषों को स्त्रीद्वेषी नहीं मानते, केवल उन्हें ही मानते हैं जो खुलेआम महिलाओं से नफरत करते हैं या उन्हें हीन मानते हैं।

5. **शोध परिकल्पना :–**

अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं तैयार की है :–

1. परिस्थितिक नारीवाद के सैद्धांतिक विषयों पर अध्ययन को समझने मे सहायक रहेगा।
2. भारत में पारिस्थितिक नारीवाद सम्बन्धित विचार की स्थिति को समझने मे सहायक रहेगें।
3. जेंडर विकास और पर्यावरण के बीच विभिन्न आयामों को समझने में सहायक रहेगा।

6. **शोध प्रश्नः–**

1) परिस्थितक नारीवाद का सैद्धांतिक अध्ययन पर चर्चा कीजिए?
2) भारत में सबसे प्रमुख पर्यावरण आंदोलनों पर चर्चा कीजिए?
3) नारीबाद एक बौद्धिक प्रतिबद्धता और एक राजनीतिक आंदोलन हैं चर्चा कीजिए?
4) महिलाओं के समाजशास्त्र का किस प्रकार समर्थन करते हैं? ?
5) नारीवादी के रूप में वंदना शिव पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए

7. शोध पद्धतिः–

प्रस्तावित शोध प्रबंध में ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा। ऐतिहासिक शोध विधि द्वारा अतित के विचारों के आधार पर वर्तमान में प्रासंगिकता ज्ञात करना । इस विधि से ग्रंथालयों से विचारों की विगत घटनाओं एवं प्रवृतियों के आधार पर वर्तमान परिदृश्य को समझा जा सकेगा। विश्लेषणात्मक विधि द्वारा पहले से उपलब्ध तथ्यों या जानकारी का उपयोग किया जायेगा और इस सामग्री का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिये उसका विश्लेषण किया जायेगा। तुलनात्मक शोध विधि के अन्तर्गत किन्हीं मानदण्डों के आधार पर दो या दो से अधिक परिस्थितियों अथवा तथ्यों की तुलना जा सकेगी । शोध हेतु अनेक प्रकार की सामग्री के संकलन हेतु प्राथमिक सामग्री व द्वितीयक सामग्री का प्रयोग किया जायेगा । इस शोध कार्य में कौटिल्य के महिला सम्बधित विचारों का विश्लेषण हेतु द्वितीयक सामग्री का प्रयोग किया जायेगा जो निम्न लिखित हैंः–

1. पुस्तकालय में उपलब्ध सभी सूचनाएँ
2. पुस्तकें
3. लेख, पत्र–पत्रिकाऐं
4. पाण्डुलिपि
5. पूर्व में हुए शोध अध्ययन

पारिस्थितिक नारीवाद के विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन के क्षेत्र वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता हेतु प्राथमिक सामग्री का प्रयोग किया गया जायेगा। प्राथमिक सामग्री को एकत्रित करने के लिये निम्नलिखित प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा।

1. साक्षात्कार
2. अनुसूची प्रश्नावली

वर्तमान काल के विद्वानों द्वारा लिखित सहायक ग्रंथों से सामग्री प्राप्त की जा सकेगी। अनेक पत्र–पत्रिकाओं, इन्टरनेट जनरल्स, शोध ग्रंथों आदि की सहायता ली जायेगी ।

इस अध्ययन में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं विकासात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया जायेगा। इस शोध के दौरान सार्थक पुस्तकों, लेखों, दस्तावेजों और अन्य स्त्रोतों की सहायता ली जायेगी, जिससे अध्ययन में समग्रता होगी।

वर्तमान काल के विद्वानों द्वारा लिखित सहायक ग्रंथों से सामग्री प्राप्त की जा सकेगी। अनेक पत्र–पत्रिकाओं, इन्टरनेट जनरल्स, शोध ग्रंथों आदि की सहायता ली जायेगी ।

8. साहित्य अवलोकन

1. वंदना शिवा (जन्म. 5 नवम्बर 1952, देहरादून, उत्तराखंड, भारत), एक दार्शनिक, पर्यावरण कार्यकर्ता, पर्यावरण संबंधी नारी अधिकारवादी एवं कई पुस्तकों की लेखिका हैं। वर्तमान में

दिल्ली में स्थित, शिवा अग्रणी वैज्ञानिक और तकनीकी पत्रिकाओं में 300 से अधिक लेखों की रचनाकार हैं। उन्होंने 1978 में डॉक्टरी शोध निबंधः ''हिडेन वैरिएबल्स एंड लोकैलिटी इन क्वान्टम थ्योरी'' के साथ पश्चिमी ओंटेरियो विश्वविद्यालय, कनाडा से अपनी पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। शिवा ने 1970 के दशक के दौरान अहिंसात्मक चिपको आंदोलन में भाग लिया। इस आंदोलन ने, जिसके कुछ मुख्य प्रतिभागी महिलाएं थी, पेड़ों की कटाई को रोकने के लिए पेड़ों के चारों तरफ मानव चक्र तैयार करने की पद्धति को अपनाया। वे वैश्वीकरण के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय फोरम की नेताओं में से एक हैं (जेरी मैंडर, एडवर्ड गोल्डस्मिथ, राल्फ नैडर, जेरेमी रिफकीन आदि के साथ) और वे वैश्वीकरण में परिवर्तन लाओ (अल्टर ग्लोबलाइजेशन मूवमेंट) नामक वैश्विक एकजुटता आंदोलन की एक विभूति हैं। उन्होंने कई पारंपरिक प्रथाओं के ज्ञान के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किया है,

2. डी'एउबोन ध्पारिस्थितिक नारीबादी विचारक मानव और प्राकृतिक दुनिया के बीच संबंधों का विश्लेषण करने के लिए लिंग की अवधारणा को आकर्षित करते हैं। यह शब्द फ्रांसीसी लेखक फ्रांकोइस डी'एज्बोन द्वारा अपनी पुस्तक ले फेमिनिस्गे ओ ला मोर्ट (1974) में गढ़ा गया था। इकोफेमिनिस्ट सिद्धांत हरित राजनीति के एक नारीवादी दृष्टिकोण पर जोर देता है जो एक समतावादी, सहयोगी समाज की मांग करता है जिसमें कोई एक प्रमुख समूह न हो। आज, पारिस्थितिक नारीवाद की कई शाखाएँ हैं, विभिन्न दृष्टिकोणों और विश्लेषणों के साथ, जिसमें उदार पारिस्थितिकवाद, आध्यात्मिक/सांस्कृतिक पारिस्थितिकवाद और सामाजिक ध समाजवादी पारिस्थितिकवाद (या भौतिकवादी पारिस्थितिकवाद) शामिल हैं। पारिस्थितिक नारीवाद की व्याख्या और इसे सामाजिक विचारों पर कैसे लागू किया जा सकता है, इसमें पारिस्थितिक नारीवादी कला, सामाजिक न्याय और राजनीतिक दर्शन, धर्म, समकालीन नारीवाद और कविता शामिल हैं।

3. स्टारहॉक एक अमेरिकी लेखिका और कार्यकर्ता स्टारहॉक अध्यात्मवाद और पारिस्थितिक नारीवाद में अपने काम के लिए जानी जाती हैं। वह प्रकृति और आत्मा के आसपास के मुद्दों में सामाजिक न्याय की वकालत करती है। ये सामाजिक न्याय मुद्दे नारीवाद और पारिस्थितिक नारीवाद के दायरे में आते हैं। वह प्रतिच्छेदन और आध्यात्मिकता, पर्यावरण चेतना और यौन और लिंग मुक्ति के महत्व के माध्यम से उत्पीड़न से लड़ने में विश्वास करती है ।

4. ग्रेटा गार्ड ग्रेटा गार्ड एक अमेरिकी पारिस्थितिक नारीवादी विद्वान और कार्यकर्ता हैं। क्षेत्र में उनका प्रमुख योगदान विचित्र सिद्धांत, शाकाहार और पशु मुक्ति के विचारों को जोड़ता है। उनके प्रमुख सिद्धांतों में पारिस्थितिकतावाद शामिल हैं जो पारिस्थितिक नारीवाद और अन्य नारीवादी सिद्धांतों को पारिस्थितिक नारीबाद के भीतर सामाजिक मुद्दों की विस्तृत श्रृंखला को डी'एउबोन/पारिस्थितिक नारीवादी विचारक मानव और प्राकृतिक दुनिया के बीच संबंधों का विश्लेषण करने के लिए लिंग की अवधारणा को आकर्षित करते हैं। यह शब्द फ्रांसीसी लेखक

फ्रांकोइस डीशएउबोन द्वारा अपनी पुस्तक ले फेमिनिस्मे ओ ला मोर्ट (1974) में गढ़ा गया था। इकोफेमिनिस्ट सिद्धांत हरित राजनीति के एक नारीवादी दृष्टिकोण पर जोर देता है जो एक समतावादी, सहयोगी समाज की मांग करता है जिसमें कोई एक प्रमुख समूह न हो। आज, पारिस्थितिक नारीवाद की कई शाखाएँ हैं, विभिन्न दृष्टिकोणों और विश्लेषणों के साथ, जिसमें उदार पारिस्थितिकवाद, आध्यात्मिक/सांस्कृतिक पारिस्थितिकवाद, और सामाजिक/समाजवादी पारिस्थितिकवाद (या भौतिकवादी पारिस्थितिकवाद) शामिल हैं। पारिस्थितिक नारीवाद की व्याख्या और इसे सामाजिक विचारों पर कैसे लागू किया जा सकता है, इसमें पारिस्थितिक नारीवादी कला, सामाजिक न्याय और राजनीतिक दर्शन, धर्म, समकालीन नारीवाद और कविता शामिल हैं।

3. स्टारहोंक एक अमेरिकी लेखिका और कार्यकर्ता स्टारहोंक अध्यात्मवाद और पारिस्थितिक नारीवाद में अपने काम के लिए जानी जाती हैं। वह प्रकृति और आत्मा के आसपास के मुद्दों में सामाजिक न्याय की वकालत करती है। ये सामाजिक न्याय मुद्दे नारीवाद और पारिस्थितिक नारीवाद के दायरे में आते हैं। वह प्रतिच्छेदन और आध्यात्मिकता, पर्यावरण चेतना और यौन और लिंग मुक्ति के महत्व के माध्यम से उत्पीड़न से लड़ने में विश्वास करती है।

4. ग्रेटा गार्ड– ग्रेटा गार्ड एक अमेरिकी पारिस्थितिक नारीवादी विद्वान और कार्यकर्ता हैं। क्षेत्र में उनका प्रमुख योगदान विचित्र सिद्धांत, शाकाहार और पशु मुक्ति के विचारों को जोड़ता है। उनके प्रमुख सिद्धांतों में पारिस्थितिकतावाद शामिल है जो पारिस्थितिक नारीवाद और अन्य नारीवादी सिद्धांतों को पारिस्थितिक नारीवाद के भीतर सामाजिक मुद्दों की विस्तृत श्रृंखला को संबोधित करने के लिए साहित्यिक आलोचना और संरचना को शामिल करने के लिए काम करता है। वह एक पारिस्थितिक कार्यकर्ता और यूएस ग्रीन पार्टी और ग्रीन मूवमेंट में नेता हैं।

9. संकलन :–

- इकोफेमिनिज्मः महिला, संस्कृति, प्रकृति निस्वान एर्कल की संपादकीय सहायता से करेन जे. वॉरेन द्वारा संपादित
- इकोफेमिनिज्म और वैश्वीकरणः संस्कृति, संदर्भ और धर्म की खोज हीथर ईटन और लोइस एन लोरेंटजेन द्वारा संपादित
- इकोफेमिनिस्ट साइंस फिक्शनः लिंग, पारिस्थितिकी और साहित्य पर अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य, डगलस ए. वाकोच द्वारा संपादित
- पर्यावरण–पर्याप्तता और वैश्विक न्यायः महिलाएं राजनीतिक पारिस्थितिकी लिखती हैं। , एरियल साललेह द्वारा संपादित
- नारीवादी पारिस्थितिक आलोचनाः पर्यावरण, महिला और साहित्य, डगलस ए. वाकोच द्वारा संपादित

Jayoti Vidyapeeth Women's University
Estd. in 2008
''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ''

- महिलाओं की आध्यात्मिकता की राजनीतिः नारीवादी आंदोलन के भीतर आध्यात्मिक शक्ति के उदय पर निबंध, चार्लेन स्प्रेटनक द्वारा संपादित
- महिलाएं और प्रकृति?: लिंग, शरीर और पर्यावरण में द्वैतवाद से परे, डगलस ए. वाकोच और सैम मिकी द्वारा संपादित
- पृथ्वी का उपचार करने वाली महिलाएँः पारिस्थितिकी, नारीवाद और धर्म पर तीसरी दुनिया की महिलाएँ, रोजमेरी रैडफोर्ड रुएथर द्वारा संपादित

10. **संदर्भ ग्रंथ सूची एवं वेब लिंक्स :-**

1. हरिकृष्ण रावत, 2007, उच्चत्तर समाजशास्त्र विश्व कोश रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 180–181
2. साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनीलोकनीता, 2001, नारीवादी राजनीति संघर्ष एवं मुद्दे, हिन्दी माध्यम कार्यन्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
3. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ फेमीनिज्म, 1986
4. साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता 2001 नारीवादी राजनीति संघर्ष एवं मुद्दे, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृष्ठ–40
5. इपक, साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता, पृष्ठ–42, 43
6. फ्रेडरिक एंजिल्स 1884 द ऑरिजिन ऑफ द फैमिली, प्राइवेट प्रोपर्टी एण्ड द स्टेट, हॉटिजेन ज्यूरिख, जर्मनी
7. इपक साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता, पृष्ठ 33
8. मर्चेन्ट कॉरलियन, 1992 चेप्टर 8 इन रेडीकल इकोलॉजी द सर्च फॉर ए लाइवेवल वर्ल्ड न्यूयार्क, रॉट्लीड्ज पृष्ठ 184
9. राल्टे लालरीनामी, 2012, द वर्ल्ड एज द बॉडी ऑफ गॉड इकोफिमीनिस्ट थियोलॉजीकल डिसकोर्स विथ स्पेशल रिफरेन्स टू ट्राइवल वूमेन इन इण्डिया
10. वंदना शिवा, 1999 कोलोनियलिज्म एण्ड द इवोल्यूशन ऑफ मेसीलिनिस्ट कोरेस्ट्री, पृ. 41
11. हूज हू हॉफ वोमेन एण्ड द एनवायर्नमेन्ट छन् रिट्राइब्ड 15 अक्टूबर, 2013
12. परमार, पुभ्रा, नारीवादी सिद्धांत और व्यवहार, ओरिएंट ब्लैकस्वान प्रकाषन, दिल्ली, 53 से उद्धृत पृ.
13. कोमबाही रिवर कॉलेक्टिवः ए ब्लैक फेमीनिस्ट स्टेटमेन्ट, 1974
14. स्टेवी जेक्सन जैकी जोन्स, 1998 कन्टेम्पररी फैमीनिस्ट थ्योरी, एडिनबर्ग यूनीवर्सिटी प्रेस,
15. अरविन्द कुमार सिंह, दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय गोरखपुर में यूजीसी. जे. फेलोशिप के साथ डॉक्टरल अनुसंधानकर्ता हैं। आर. ए

16. डा० विनीता पाठक उपाचार्य, विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय गोरखपुर

17. मैरी मेलर द्वारा नारीवाद और पारिस्थितिकी

18. राजनीति के रूप में पारिस्थितिक नारीवादरू प्रकृति, मार्क्स और उत्तर आधुनिक, एरियल सल्लेह द्वारा

19. फ्रांकोइस डी'एउबोन ने अपनी पुस्तक ले फेमिनिस्मे ओउ ला मोर्ट (1974) 20. करेन वॉरेन, ''पारिस्थितिक नारीवादी दर्शनः मुद्दे का एक अवलोकन'', पारिस्थितिक नारीवाद, रूटलेज 1994

21. मनीषा राव, इकोफेमिनिज्म एट द क्रॉसरोड्स इन इंडियाः ए रिव्यू, 20 (2012): 124–142..

22. जॉर्ज मैथ्यू नालुन्नक्कल, ष्टूवर्ड्स एन ऑर्गेनिक वुमनिज्मः न्यू कंटूर्स ऑफ इकोफेमिनिज्म इन इंडिया। ''जर्नल ऑफ लूथरन एथिक्स'' 3 (2003): 1–191

23. मनीषा राव, इकोफेमिनिज्म एट द क्रॉसरोड्स इन इंडिया ए रिव्यू, 125

24. रोजमेरी रैडफोर्ड रदर, ''इकोफेमिनिज़्म द चौलेंज टू थियोलॉजी'' 1997 –

25. करेन जे. वॉरेन, एड., ''द पावर एंड द प्रॉमिस ऑफ इकोलॉजिकल फेमिनिज्म'' में पारिस्थितिक नारीवादी दर्शन (ब्लूमिंगटनः इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996), पी. 20.

26. इंगा बी. टॉलेफसेन, इकोफेमिनिज्म, ''भारतीय और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में धर्म और प्रकृति।'' वैकल्पिक आध्यात्मिकता और धर्म समीक्षा, 2 (2011): 89–951

27. सीमा, ''भारत में पारिस्थितिक नारीवाद और पर्यावरण आंदोलन।'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट रिसर्च, 6 (2014) : 4658446591

28. मनीषा राव, इकोफेमिनिज्म एट द क्रॉसरोड्स इन इंडियाः ए रिव्यू, 1341 29. डी एउबोन द्वारा अपनी पुस्तक ले फेमिनिस्मे ओ ला मोर्ट (1974)

30. गार्ड, ग्रेटा क्लेयर (2011)। ''इकोफेमिनिज्म रिविजिटेडः रिजेक्टिंग एसेंशियलिज्म एंड री–प्लेसिंग स्पीशीज इन ए मटेरियल फेमिनिस्ट एनवायरनमेंटलिज्म''। नारीवादी